**बहुपत्नी विवाह :** इस विवाह में एक ही वर से कई वधूओं का विवाह संपन्न होता है। यह प्रथा बहुपति प्रथा के ठीक विपरीत है। इस प्रकार के विवाह पर धनवान तथा शक्तिशाली लोगों का वर्चस्व रहा है। उद्‌विकासवादी मानवशास्त्रियों के अनुसार जब मानव कृषि सभ्यता में प्रवेश किया होगा, तब इस प्रथा की उत्पत्ति हुई होगी। इस अवस्था में मानव को खाद्यान्न की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता था। साथ ही कृषि कर्म के लिए अधिक मानवशक्ति की आवश्यकता थी। मानवशक्ति को जनसंख्या वृद्धि द्वारा ही अधिक बढ़ाया जा सकता था। अतः बहुपत्नी प्रथा प्रकाश में आई। बाद में जब राजतंत्र की स्थापना हुई, तब अधिक पत्नी रखना सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ गया। एक राजा का युद्ध दूसरे राजा से होता था। युद्ध में पराजित राजाओं की पत्नियों से विजयी राजा विवाह रचाता था। कुछ समाज में वंश चलाने के लिए एक से अधिक पत्नी से विवाह रचाने की प्रथा है। महाभारत में हमें उल्लेख मिलता है कि शक्तिशाली राजाओं द्वारा कई पत्नियाँ रखी जाती थी। स्वयं कृष्ण के पास सोलह हजार एक सौ आठ पटरानियाँ थी।

विश्व में अफ्रीका ही वह भूमि है जहाँ यह प्रथा अधिक फली–फूली है। यहाँ के राजा सैकड़ो पत्नियाँ रख सकते हैं। यहाँ भिन्न–भिन्न स्त्रियों की संतानों को माताओं के नाम से जाना जाता है। इसी आधार पर सौतेले भाईयों में भेंद जाना जाता है। राजा ही नही राजा के सहायक भी एक से अधिक पत्नियाँ रख सकते हैं। न्यूगिनिया के मुडुगुमार में एकपिता को अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी पुत्री के बदले पत्नी प्राप्त कर सकता है। बहुपत्नी प्रथा का उल्लेख रामायण में भी मिलता है। राजा दशरथ की तीन रानियाँ थी कौशल्या, सुमित्रा, एवं कैकयी।

बहुपत्नित्व के अस्तित्व में आने के कई कारण हो सकते हैं जैसे वंश को आगे बढ़ाने, जनसंख्या बढ़ाने, सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने, स्त्री पुरूष के अनुपात में अंतर होने, युद्ध का प्रचलन, देवर विवाह तथा भाभी विवाह का प्रचलन ।

बहुपत्नित्व के अनेक कारण और लाभ हो सकते हैं। लेकिन इस प्रथा के कुछ दोष भी है। यह प्रथा परिवार में संघर्ष, मनमुटाव, ईर्ष्या और वैमनस्य के लिए जिम्मेवार होती है। कभी–कभी पारिवारिक जीवन कष्ट हो जाता है।

**समूह विवाह :** यह विवाह दो परिवारों के बीच नारी विनिमय का उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस विवाह में एक परिवार के सभी भाईयों का विवाह दूसरे परिवार की सभी बहनों के साथ होता है तथा दूसरे समूह के सभी भाईयों का विवाह पहले समूह की सभी बहनों के साथ होता है। यह प्रथा आस्ट्रेलिया की जनजातियों में पाई जाती है। वहाँ पर एक कुल की सभी पुत्रियाँ दूसरे कुल की पुत्र वधूएं समझी जाती है तथा दूसरे कुल की सभी पुत्रियाँ पहले कुल की पुत्र वधूएं समझी जाती है।